International Journal of Innovative Research in Science | Engineering | Technology

ISSN(O): 2319-8753

ISSN(P): 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science Engineering and Technology (IJIRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

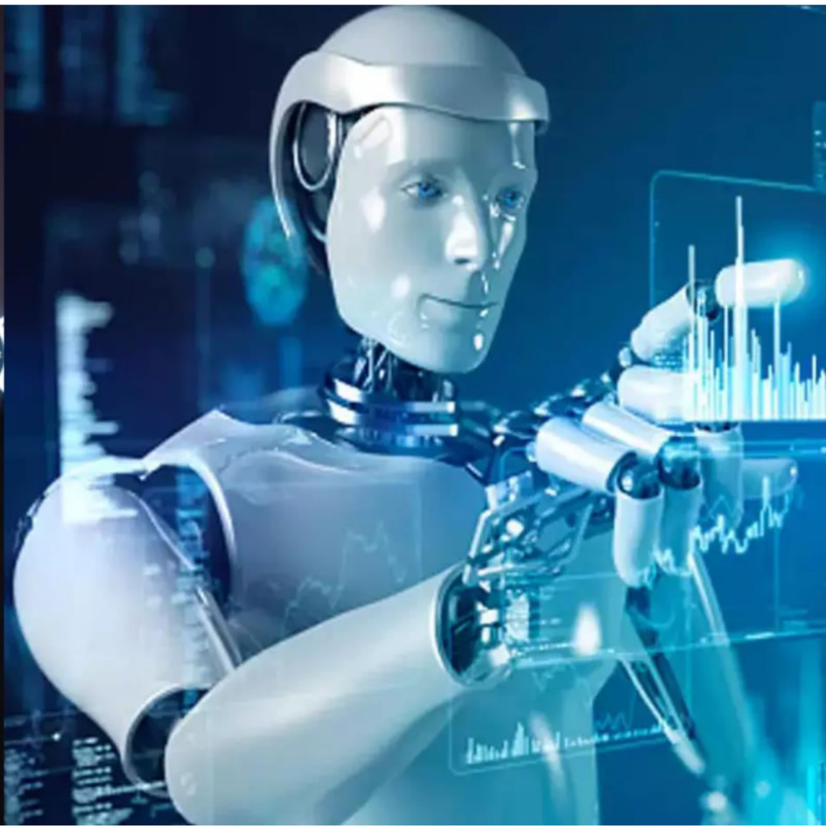

Impact Factor: 8.699

Volume 14, Issue 7, July 2025

www.ijirset.com   ijirset@gmail.com   +91-9940572462   +91 63819 07438

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.699

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 14, Issue 7, July 2025

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1407137|

स्थापत्य कला में लोक परंपरा और धार्मिक प्रतीकों का महत्त्व (बाड़मेर जिले के मंदिरों के विशेष संदर्भ में)

देवेन्द्र कुमार
शोधार्थी, इतिहास विभाग
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान (भारत)

सारांश

स्थापत्य कला किसी भी समाज की सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक आस्था और लोक परंपराओं का मूर्त रूप होती है। यह केवल पत्थरों और दीवारों का ढांचा नहीं है, बल्कि उसमें उस क्षेत्र की ऐतिहासिक स्मृतियाँ, धार्मिक विश्वास और सामुदायिक जीवन की विशेषताएँ भी सजीव रहती हैं। राजस्थान का बाड़मेर जिला, मरुस्थलीय भौगोलिक परिस्थिति और सीमित संसाधनों के बावजूद, अपनी विशिष्ट स्थापत्य कला और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के मंदिर, मस्जिदें, जैन धर्मस्थल, हवेलियाँ तथा लोक–निर्मित आवासीय ढाँचे इस बात का साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं कि स्थापत्य केवल वास्तु–कौशल का प्रदर्शन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और धार्मिक प्रतीकों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। बाड़मेर जिले की स्थापत्य धरोहरों में लोक परंपराओं का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। उदाहरणस्वरूप, मंदिरों और धार्मिक स्थलों पर की गई नक्काशी में स्थानीय देवी–देवताओं, लोककथाओं और धार्मिक प्रतीकों का विशेष महत्व है। दीवारों व खंभों पर उकेरी गई ज्यामितीय आकृतियाँ, पौराणिक कथाओं से प्रेरित चित्रांकन और प्राकृतिक प्रतीकात्मक रूप, समाज की आध्यात्मिक धारा के साथ–साथ उसकी कलात्मक संवेदनाओं को भी दर्शाते हैं। ये प्रतीक केवल धार्मिक दृष्टि से ही महत्त्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक एकजुटता, सामुदायिक पहचान और सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने का कार्य भी करते हैं।

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य बाड़मेर जिले के मंदिरों की स्थापत्य कला के महत्त्व का विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत यह देखा जाएगा कि किस प्रकार इन मंदिरों की स्थापत्य कला में निहित धार्मिक दृष्टिकोण ने समाज की आध्यात्मिक एकजुटता और सांस्कृतिक चेतना को जीवित रखा है। साथ ही, यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि इन धरोहरों के संरक्षण में वर्तमान समय में क्या चुनौतियाँ हैं और किस प्रकार इनका संरक्षण करते हुए सांस्कृतिक धरोहर को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाया जा सकता है। अतः यह शोध बाड़मेर जिले की स्थापत्य धरोहर के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास करता कि धार्मिक प्रतीक न केवल अतीत की स्मृति हैं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की सांस्कृतिक निरंतरता के लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं।

मूल शब्द – स्थापत्य कला, लोक परंपरा, धार्मिक प्रतीक, सांस्कृतिक धरोहर

प्रस्तावना :

भारतीय स्थापत्य कला का स्वरूप अत्यंत बहुआयामी और समृद्ध है, जिसमें प्रत्येक क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियाँ, सांस्कृतिक परंपराएँ और धार्मिक विश्वास एक विशिष्ट पहचान का निर्माण करते हैं। राजस्थान, विशेषकर बाड़मेर जिला, इस दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। मरुस्थलीय भू–भाग में स्थित यह क्षेत्र जहाँ कठोर जलवायु और सीमित प्राकृतिक संसाधन मौजूद हैं, वहीं इसकी स्थापत्य धरोहर लोक परंपराओं और धार्मिक प्रतीकों की गहन अभिव्यक्ति प्रस्तुत करती है। यहाँ की संरचनाएँ केवल निवास अथवा पूजा के स्थल नहीं हैं, बल्कि यह उस सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन की झलक भी देती हैं जिसमें धार्मिक आस्था, सामुदायिक एकजुटता और लोकमानस की कलात्मक संवेदनाएँ गहराई से समाहित हैं।

बाड़मेर की स्थापत्य कला में लोक परंपराओं की महत्ता सर्वप्रथम इसकी निर्माण शैली में दिखाई देती है। मिट्टी, पत्थर और लकड़ी जैसे स्थानीय संसाधनों का प्रयोग कर निर्मित घर, हवेलियाँ और धार्मिक स्थल पर्यावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इन संरचनाओं में प्रयुक्त अलंकरण, चित्रांकन और नक्काशी न केवल सौंदर्यबोध का परिचायक है, बल्कि इनमें स्थानीय समाज की धार्मिक धारणाएँ और परंपरागत प्रतीक भी प्रतिबिंबित होते हैं। उदाहरणस्वरूप, मंदिरों में देवी–देवताओं की मूर्तिकला, जैन धर्मस्थलों की कलात्मक बारीकियाँ और मस्जिदों की स्थापत्य शैली यह स्पष्ट करती है कि धार्मिक आस्था किस प्रकार स्थापत्य में रूपांतरित हुई। धार्मिक प्रतीकों का महत्त्व केवल पूजा–अर्चना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज की सामूहिक स्मृति और पहचान का अंग भी हैं। लोक परंपराओं से जुड़े प्रतीकात्मक चित्र, ज्यामितीय आकृतियाँ, पशु–पक्षियों और पौराणिक कथाओं से संबंधित दृश्य इस क्षेत्र की सांस्कृतिक चेतना को प्रकट करते हैं। ये प्रतीक समाज के विभिन्न वर्गों के बीच एक साझा सांस्कृतिक धरोहर के रूप में कार्य करते हैं, जो उन्हें आपस में जोड़ते हैं और पीढ़ियों तक सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखते हैं।

इसके अतिरिक्त, बाड़मेर की स्थापत्य धरोहर यह भी दर्शाती है कि किस प्रकार सीमित संसाधनों के बावजूद स्थानीय कारीगरों ने अपनी कला और कौशल से धार्मिक प्रतीकों को जीवन्त रूप प्रदान किया। यह न केवल कलात्मक उत्कृष्टता का परिचायक है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि स्थापत्य कला के माध्यम से समाज ने अपनी आस्थाओं और परंपराओं को स्थायित्व प्रदान किया।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण के प्रभाव से पारंपरिक स्थापत्य धरोहर खतरे में है, तब बाड़मेर जैसे क्षेत्र की स्थापत्य कला का अध्ययन और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। यह शोध न केवल धार्मिक प्रतीकों और लोक परंपराओं के महत्त्व को रेखांकित करेगा, बल्कि इस पर भी प्रकाश डालेगा कि इन धरोहरों का संरक्षण कैसे किया जाए ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए यह सांस्कृतिक धरोहर संरक्षित रह सके।

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|
Volume 14, Issue 7, July 2025
|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1407137|

उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध–पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है–

- बाड़मेर मे स्थापत्य कला के महत्त्व का विश्लेषण करना
- जिले के महत्त्वपूर्ण मंदिरों के क्षेत्रीय महत्त्व का वर्णन करना
- इन धार्मिक स्थलों के विकास में आने वाली प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण करना
- इनके संरक्षण हेतु किए जा रहे सरकारी प्रयासों का आंकलन करना एवं संरक्षण हेतु सुझाव प्रस्तुत करना

अध्ययन क्षेत्र :

राजस्थान का थार मरुस्थल अपने अद्भुत भौगोलिक स्वरुप, समृद्ध ऐतिहासिक घटनाओं और विविधतापूर्ण सांस्कृतिक परम्पराओं के लिए जाना जाता है। इसी थार मरुस्थल में स्थित है, राजस्थान का दूसरा व भारत का पांचवा सबसे बड़ा जिला, बाड़मेर। लगभग 28,387 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैले इस जिले का ग्लोब पर 24°58′ से 26°32′ उत्तरी अंक्षाश तथा 70°05′ से 72°52′ पूर्वी देशान्तरों के मध्य विस्तार है। बाड़मेर का एक बड़ा भाग रेतीला एवं मरुस्थलीय है। प्राचीन काल में यह मालानी नाम से प्रसिद्ध था। प्राचीन सिन्धु घाटी सभ्यता व महाभारत कालीन संदर्भों में इसका उल्लेख मिलता है। 12वीं शताब्दी में यहाँ मेदतियों (राठौड़ वंश) का शासन रहा। राव सिहा एवं उनके वंशजो ने इस क्षेत्र में अपनी सत्ता स्थापित की। 13वीं शताब्दी में परमार शासक राव बहाड़ ने बाड़मेर शहर को बसाया, जिसे पहले बहादमेर (बहादुर का पहाड़ी किला) तथा बाद में 'बाड़मेर'कहा जाने लगा। यहाँ का सांस्कृतिक परिदृश्य उत्कृष्ट कोटि का माना जाता है। यहाँ स्थित किराडू मंदिरों की स्थापत्य कला 11वीं शताब्दी की बताई जाती है। इसके अतिरिक्त नाकोड़ा जी जैन मंदिर, वीरवाला धाम, मंदोदरी माता मंदिर, रामदेवरा मंदिर अन्य आस्था के केंद्र है। यहाँ की प्राचीन जीवन शैली व स्थापत्य कला का विकसित स्वरुप इन्ही आस्था के केन्द्रों से भली प्रकार समझा व परखा जा सकता है।

जिले में स्थापत्य कला व महत्व :

बाड़मेर की स्थापत्य कला में प्रयुक्त धार्मिक प्रतीकों का एक और महत्त्व यह है कि वे स्थानीय जनता के जीवन मूल्यों और विश्व दृष्टिकोण को व्यक्त करते हैं। लोक परंपराओं से जुड़ी स्थापत्य शैली यह बताती है कि कैसे कारीगरों ने सीमित साधनों और कठिन मरुस्थलीय परिस्थितियों में भी एक ऐसी कला रची, जिसमें धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक चेतना और जीवन की सहजता का अद्भुत समन्वय झलकता है। स्थापत्य में प्रयुक्त प्रतीकों और परंपराओं ने न केवल उस समय के समाज को एकता के सूत्र में बांधे रखा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी एक सांस्कृतिक धरोहर प्रदान की।

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.699

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 14, Issue 7, July 2025

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1407137|

जिले के प्रमुख मंदिर :

बाड़मेर ऐतिहासिक मंदिरों, स्थापत्य कला और सांस्कृतिक विविधताओं का भी समृद्ध भंडार है। यां के मंदिर न केवल धार्मिक आस्था के प्रतीक हैं बल्कि राजपूतकालीन स्थापत्य कला, मूर्तिकला तथा लोक जीवन के इतिहास को भी अभिव्यक्त करतें हैं। बाड़मेर के मंदिरों की स्थापत्य परम्परा में वैदिक काल से लेकर प्राचीन राजवंशों, चौहानों, परमारों और मारवाड़ रियासत के योगदान की झलक मिलती है। बाड़मेर के कुछ प्रमुख मंदिरों का परिचय निम्न प्रकार है –

किराडू के मंदिर :

किराडू बाड़मेर मुख्यालय से 35 किलोमीटर दूर थार मरुस्थल में स्थित एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है, जहाँ 5 प्रमुख मंदिरों का समूह मिलता है। जिनमें से सोमेश्वर मंदिर सर्वाधिक सरंक्षित है, शेष मंदिर जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है। यह मंदिर 11वीं –12वीं सदी के बीच परमार राजाओं द्वारा बनवाए गये थे। किराडू का सबसे प्रमुख मंदिर – सोमेश्वर महादेव मंदिर, शिव को समर्पित है। इन मंदिरों की स्थापत्य शैली में नागर शैली की विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं। इन्हें "राजस्थान का खजुराहो" भी कहा जाता है।

इन मंदिरों की दीवारों, स्तंभों एवं तोरणों पर अद्‌भुत शिल्पकारी की गई है, नृत्य करती अप्सराएँ, देवी–देवताओं की सुन्दर मूर्तियाँ, पशु–पक्षियों एवं मिथकीय जीवों का चित्रांकन अत्यंत सूक्ष्मता से किया गया है। इनकी मूर्तिकला में खजुराहो और कोणार्क मंदिरों जैसी जीवन्तता प्रकट होती है। मंदिरों के मंडप तथा गर्भगृह की स्पष्ट सरंचना है, मंडप की छतें सुन्दर काष्ठनुमा नक्काशी से युक्त हैं तथा गर्भगृह की दीवारों पर तांत्रिक देवी–देवताओं की मुर्तिया उकेरी गयी हैं। मंदिरों के शिखरों पर अमलक और कलश सुशोभित हैं। सोमेश्वर मंदिर की दीवारों पर शिव–पार्वती, नरहरि, गजलक्ष्मी, भैरव, यम, वरुण, इन्द्र आदि की मूर्तियाँ अंकित है। इसके गर्भगृह के चारों ओर परिक्रमा पथ है तथा स्तंभों पर अनेक मिथकीय दृश्य उकेरे गए हैं। प्रवेशद्वारों पर द्वारपालों की की मूर्तियाँ तथा आंतरिक भाग में अप्सराओं की नृत्य मुद्राएं अत्यंत आकर्षक हैं। सोमेश्वर मंदिर के अतिरिक्त अन्य चार मंदिरों के भग्नावशेषों की सरंचना सोमेश्वर मंदिर के समान ही है किन्तु समय और प्राकृतिक कारणों से अत्यधिक क्षति पहुंची है। ये मंदिर विष्णु, गणेश तथा सूर्य को समर्पित माने जाते हैं।

रानी भटियाणी माता मंदिर :

रानी भटियाणी माता का मंदिर बाड़मेर से 20 किलोमीटर दूर जसोल नामक गाँव में स्थित है। इसका निर्माण लगभग 18वीं शताब्दी में स्थानीय ठाकुर परिवार द्वारा करवाया गया था। रानी भटियाणी का वास्तविक नाम स्वर्णा कँवर था जो थारपारकर, सिंध के भटियाण राजघराने से थीं तथा जसोल के राठौड़ खेतसिंह से उनका विवाह हुआ था। एक झूठी खबर से उन्होंने अपना बलिदान दे दिया था। उनके त्याग और बलिदान की गाथा

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|
Volume 14, Issue 7, July 2025
|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1407137|

स्थानीय जनमानस में गहराई से जुड़ गयी। स्थानीय लोग उन्हें दिव्य व देवी मानकर मंदिर की स्थापना की। समय के साथ मन्दिर का जीर्णोद्धार और विस्तार होता गया। यह मंदिर राजस्थानी स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। मंदिर में जैसलमेर के पीले पत्थरों का प्रयोग किया गया है जो सुनहरी आभा प्रदान करता है। पत्थरों को जोड़ने के लिए चुने व मिट्टी के मिश्रण का उपयोग किया गया है। मंदिर का प्रमुख भाग गर्भगृह है, जिसमे रानी भटियाणी माता की भव्य मूर्ति स्थापित है जिसे राजस्थानी रानी की भांति वस्त्राभूषणों से सजाया गया है हाथों में चूड़ियाँ, माथे पर टिका, नथ और मांगटिका आदि माता की दिव्यता को प्रकट करतें हैं। गर्भगृह के ठीक सामने मंडप है जिसके स्तंभों व छतों पर पुष्प, बेल–बुन्टों और ज्यामितीय आकृतियों की सुन्दर नक्काशी की गयी है। मंदिर की दीवारों में पत्थर की जालियां बनाई गई है, जिससे सूर्य प्रकाश छनकर मंदिर में प्रवेश करता है और अध्यात्मिक वातावरण प्रदान करता है। मंदिर का शिखर, जो ऊपर की और उठता हुआ प्रतीत है, पारम्परिक राजस्थानी शैली में निर्मित है। मंदिर का मुख्य द्वार विशाल और साज–सज्जा से युक्त है जिसमे शेर, हाथी, पुष्प और देवी की आकृतियां उकेरी गई है। मंदिर प्रांगण में एक रथ भी प्रतिष्ठित है, जिसे विशेष अवसरों पर माता की शोभायात्रा के लिए प्रयुक्त किया जाता है। इस मंदिर को चमत्कारी माना जाता है यहाँ रोग मुक्ति, संतान प्राप्ति और अन्य कष्टों के निवारण हेतु श्रद्धालु आते रहते हैं। यह मंदिर हिन्दू–मुस्लिम एकता व भाईचारे का प्रतीक है। सभी धर्मो के लोग यहाँ श्रद्धा से आतें है। पाकिस्तान के सिन्धी मुस्लिम भी माता को 'बीबी' नाम से पूजते हैं। यह मंदिर बाड़मेर जिले का प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थल है, इससे जुड़े मेलों, आयोजनों, यात्राओं से स्थानीय व्यापार और हस्तशिल्प उधोग को प्रोत्साहन मिलता है।

नाकोड़ा जैन मंदिर :

नाकोड़ा गाँव की पहाड़ी पर स्थित जैन धर्मावलम्बियों का अत्यंत श्रद्धा व आस्था का केंद्र यह मंदिर बाड़मेर का एक सुप्रसिद्ध तीर्थस्थल है। यह मंदिर मुख्यतः श्री पारीश्वर भगवान को समर्पित है, जिन्हें भक्तजन 'नाकोड़ा भैरव' के रूप में पूजते हैं। इस मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में हुआ माना जाता है। प्रारम्भ में यह मंदिर पारिश्वर भगवान की मूर्ति स्थापना के लिए प्रसिद्ध हुआ। कालांतर में यहाँ भैरव देव की स्थापना हुई, जो जैन धर्म में उपास्य देव माने जातें हैं। विशेष रूप से 18वीं और 20वीं शताब्दियों में इस मंदिर का पुनर्निर्माण और विस्तार कई बार हुआ। नाकोड़ा मंदिर की वास्तुकला जैन मंदिरों की विशिष्ट नागर शैली में निर्मित है। यह मंदिर सफ़ेद संगमरमर से बना हुआ है। इसकी दीवारों, स्तंभों एवं गुबंदों पर अत्यंत सुन्दर नक्काशी की गई है। मुख्य मंदिर के गर्भगृह में श्री पारीश्वर भगवान की सुन्दर काले रंग की मूर्तियां विराजमान हैं। नाकोड़ा भैरव का विशेष स्थान मंदिर के एक अलग कक्ष में है, जहाँ भव्य श्रृंगार और भक्ति वातावरण हर समय बना रहता है। नाकोड़ा जैन मंदिर को को चमत्कारी मंदिर के रूप में भी जाना जाता है। मान्यता है कि नाकोड़ा भैरव की पूजा करने से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। विशेष रूप से महावीर जयंती, पूर्णिमा, एवं अष्ठमी के दिन देशभर से जैन

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 14, Issue 7, July 2025

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1407137|

तीर्थयात्री यहाँ दर्शन के लिए आतें है। नाकोड़ा जैन मंदिर न केवल एक धार्मिक स्थल है ,बल्कि यह राजस्थान की धार्मिक एकता, स्थापत्य कला और जैन संस्कृति का प्रतीक भी है। यहाँ की शांति, आस्था और चमत्कारी वातावरण हर व्यक्ति को आत्मिक शांति प्रदान करता है।

जोग माया मंदिर :

जोग माया मंदिर, जो कि बाड़मेर शहर के अन्दर पहाड़ी पर बने किले में अवस्थित है। इसका निर्माण 1552 ई. में रावत भीम ने करवाया था। यह एक प्रसिद्ध हिन्दू मंदिर है जो शक्ति स्वरूपा माता देवी जोग को समर्पित है। यह मंदिर ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहाँ प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु आतें हैं। जोग माया मंदिर की स्थापत्य कला राजस्थानी शैली का उत्कृष्ट उदहारण है। मंदिर की दीवारों पर विभिन्न देवी–देवताओं की आकृतियाँ उकेरी गयी हैं, इनमे मुख्य रूप से भगवान शिव, विष्णु, गणेश और अन्य हिन्दू देवताओं की मूर्तियाँ शामिल है। इस मंदिर का शिखर ऊँचा होने के साथ–साथ शिखर पर बनी कलात्मक छतरी इसका प्रमुख आकर्षण है। मंदिर निर्माण में संगमरमर और बलुआ पत्थर का प्रमुखता से उपयोग हुआ है जिन पर की गई शिल्पकला इसे ऐतिहासिक स्वरुप प्रदान करती है। मंदिर की आंतरिक सरंचना में स्थित स्तंभों एवं मेहराबों पर विशुद्ध पारम्परिक राजस्थानी स्थापत्य कला के दर्शन होते हैं। यहाँ हर वर्ष माघ माह में विशेष मेले का आयोजन होता है जिसमें दूर–दूर से लोगों का आगमन होता है। इस मंदिर का केवल धार्मिक व सांस्कृतिक महत्त्व ही नहीं अपितु विभिन्न सांस्कृतिक आदान–प्रदान में भी विशेष महत्व है।

चिन्तामणी पार्श्वनाथ जैन मंदिर :

चिन्तामणी पार्श्वनाथ जैन मंदिर, जैन धर्म के अनुयायियों के लिए महत्त्वपूर्ण धार्मिक व आस्था स्थल है। इस मंदिर का ऐतिहासिक और स्थापत्य महत्व भी लोगों का आकर्षण है। इस मंदिर का निर्माण संभवतः 12वीं – 13वीं शताब्दी में हुआ माना जाता है। यह शहर के पश्चिम में एक पहाड़ी पर बना हुआ है। मंदिर के नामकरण के सम्बन्ध में जैन अनुयायियों का मत है कि 'चिन्तामणी' शब्द 'चिंतन 'या' 'सोचने' से संबधित होता है। अतः यह स्थान मानसिक शांति और आत्मिक चिंतन का प्रतीक है। मंदिर निर्माण मुख्य रूप से सफ़ेद संगमरमर और पीतल के मिश्रण से किया गया है। इसकी दीवारों और स्तंभों पर जटिल नक्काशी और चित्रकारी की गयी है, जो भारतीय वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। मंदिर के मुख्य कक्ष में भगवान पार्श्वनाथ की प्राचीन (लगभग 500 वर्ष) भव्य प्रतिमा स्थापित है, जो श्रद्धालुओं के लिए एक महत्वपूर्ण आस्था का प्रतीक है। मंदिर की नक्काशियों में धार्मिक दृश्य, पौराणिक कथाएं और देवी–देवताओं की मूर्तियाँ शामिल है। मंदिर की छत पर भी विभिन्न प्रकार की नक्काशी और कलात्मक डिज़ाइन देखे जा सकते है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर जैन धर्म के प्रतीक चिह्न 'स्वास्तिक' और अन्य धार्मिक चिह्नों का उत्कीर्णन किया गया है। इस मंदिर के अतिरिक्त, यहाँ अन्य छोटे मंदिर भी हैं जो विभिन्न जैन तीर्थंकरों को समर्पित हैं। इन छोटे मंदिरों की जटिल शिल्पकला और मूर्तिकला

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.699

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 14, Issue 7, July 2025

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1407137|

भी अत्यंत अद्भुत है। चिंतामणी पार्श्वनाथ मंदिर न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह क्षेत्रीय सांस्कृतिक धरोहर का भी प्रतीक है। यहाँ हर साल विशाल मेले और धार्मिक उत्सव का आयोजन होता है जिसमें लाखों श्रद्धालु व पर्यटक भाग लेते हैं। जैन धर्म के अनुयायियों के लिए यह आस्था का केंद्र होने के साथ–साथ लोग मानसिक शांति प्राप्ति हेतु ध्यान साधना के लिए भी आते रहते हैं।

देवका सूर्य मंदिर :

यह बाड़मेर–जैसलमेर राष्ट्रिय राजमार्ग पर स्थित 'देवका' गाँव में प्राचीन सूर्य पूजा स्थल है। इस मंदिर का निर्माण गुर्जर–प्रतिहार राजवंश द्वारा संभवतः 12वीं –13वीं शताब्दी में करवाया हुआ माना जाता है। जब यहाँ के राजवशों में सूर्य पूजा की परम्परा थी। यह मंदिर एक छोटी पहाड़ी पर अवस्थित है। इसके आस–पास दो अन्य जीर्ण–शीर्ण अव–संरचनाये हैं जिनमें भगवाान गणेश की सुन्दर मूर्तियाँ विद्यमान है। यह मंदिर मारू–गुर्जर (सोलंकी) शैली पर आधारित है। स्थापत्य की इस शैली को मूर्तिकला, नक्काशी और वास्तुकला की जटिलता के लिए जाना जाता है। मंदिर के मुख्य गर्भगृह में शिविरित सूर्य देव की प्रतिमा स्थापित है जो सात घोड़ों वाली सारथी की मुद्रा में है, यही मुद्रा हिन्दू सूर्य पूजा का पारम्परिक रूप है। मंदिर के मंडप में नक्काशीदार स्तंभों के अलावा गोख–मकर तोरण तथा संलग्न छोटी देवली संरचनाएं दृ उत्तर एवं दक्षिण में अस्तित्वमान हैं, जिनमें कुबेर, ब्रह्मा, शिव व पार्वती शामिल हैं। मंदिर के गोलाकार शीर्ष पर छोटे–छोटे छिद्र व गोलाकार पत्थर हैं जिन पर रेखाएं अंकित हैं। मंदिर के प्रवेशद्वार को द्वारपालक व पत्तीदार लताओं का उत्कीर्णन कर सजाया गया है। इसी प्रकार बाहरी दीवारों और स्तंभों को छोटी आकृतियों में गणेश, कुबेर तथा नवग्रहों द्वारा चित्रित किया गया है। यह मंदिर राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र का महत्वपूर्ण प्राचीन सूर्य मंदिर है। मकर संक्राति तथा छठ पूजा के अवसरों पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ रहती है। स्थानीय ग्रामीण समाज की इसमें अपार आस्था है वे इस मंदिर का उपयोग जीवंत पूजा स्थल के रूप में करतें है। इस प्रकार देवका सूर्य मंदिर बाड़मेर का एक ऐतिहासिक एवं स्थापत्यशास्त्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल है।

मल्लिनाथ मंदिर :

मल्लिनाथ मन्दिर, का निर्माण उनकें अनुयायियों तथा वंशजो द्वारा 14वीं से 15वीं शताब्दी में करवाया था। मल्लिनाथ जी स्वयं कोई राजा या सामंत नहीं थे, बल्कि राठौड़ वंश के वीर योद्धा और तपस्वी संत थे। उनके जीवनकाल में ही उन्हें "लोकदेवता" एवं शिव के अवतार के रूप में पूजा जाने लगा। उनका यह प्रसिद्ध मंदिर बाड़मेर जिलें के तलवाड़ा गाँव में मुख्यालय से 120 किलोमीटर, लूणी नदी के किनारे एक ऊँचें टिल्ले पर बना हुआ है। ऊंचाई पर स्थित होने के कारण इसका सौन्दर्य और अध्यात्मिक वातावरण दोनों अत्यधिक प्रभावी हैं। मंदिर का निर्माण राजस्थानी नागर शैली में हुआ है, जिसमें स्थानीय पीले पत्थरों और चुने का उपयोग किया गया है जिससे भवन अधिक टिकाऊ बना है।

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.699

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 14, Issue 7, July 2025

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1407137|

मंदिर के मुख्य कक्ष में मल्लिनाथ जी की घोड़े पर सवार प्रतिमा एक वीर योद्धा की मुद्रा में स्थापित है। गर्भगृह छोटा परन्तु गूढता से अलंकृत हैं जिनमे पत्थर की जालियाँ और दीपक रखने के स्थान हैं। गर्भगृह के आगे विशाल मंडप है जो सभा एवं पूजा के लिए उपयोग में आता है। इसमें लोककथाओं, घंटियों, घोड़ों, फूलों, बेल–बूंटे, हंस, कमल, रथ, देवताओं और यौद्धाओं की सुन्दर नक्काशी की गयी है। नक्काशी में राजस्थानी कारीगरों की हस्तशिल्प कौशल की झलक मिलती है। मंदिर का मुख्य तोरणद्वार विशाल व शेर, हाथी, सूर्य चिह्न तथा अन्य परम्परागत राजस्थानी प्रतीक चिह्नों से सुसज्जित है। मंदिर चरों कोनों व मंडप के ऊपर छोटी–छोटी छतरियां निर्मित हैं जो राजस्थानी स्थापत्य की पहचान हैं। इस प्रकार मल्लिनाथ मंदिर की स्थापत्य कला, राजस्थान के लोक स्थापत्य, धार्मिक भावना और कारीगरों की कलात्मकता का सुन्दर समन्वय है। यह मंदिर न केवल श्रद्धा का केंद्र है, अपितु स्थापत्य प्रेमियों के लिए एक अध्ययन योग्य विरासत भी है। इसकी शुद्ध राजस्थानी शैली, सूक्ष्म नक्काशी और धार्मिक प्रतीकों से भरी सरंचना इसे राजस्थान के मंदिरों में अद्वितीय स्थान प्रदान करती है। यह राजस्थान की लोक–आस्था, वीरता, सांस्कृतिक समृद्धि और सामाजिक एकता का प्रतीक है। मल्लिनाथ जी निर्भीक, न्यायप्रिय,और धार्मिक स्वभाव के थे। वे विशेषतः गरीबों और असहायों की रक्षा करते थे, जिनके कारण उन्हें लोकदेवता की मान्यता मिली। उनकी याद में प्रतिवर्ष चैत्र माह में विशाल "तिलवाडा पशु मेला" आयोजित होता है, जिसमें ऊंट,घोड़े, बैल, गाय आदि लाये जातें हैं। मारवाड़ी नस्ल के घोड़े विशेष आकर्षण का केंद्र होते हैं।

भीमगौड़ा महादेव मंदिर :

भीमगौड़ा महादेव मंदिर बाड़मेर शहर के निकट ही स्थित है। इस मंदिर की ऐतिहासिकता लोक कथाओं और क्षेत्रीय मान्यताओं में गहराई से रची–बसी है। किवदंतियों के अनुसार महाभारत के पांडव वनवास के समय यहाँ से गुजर रहे थे। रेगिस्तान में प्यास लगने पर भीम द्वारा अपनी गदा से भूमि पर प्रहार कर यहाँ से जल निकाला था। स्थानीय जनमानस में यह गाथा अत्यंत गहराई से समाई हुई है यह शिवलिंग स्वयं प्रकट है और इसकी स्थापना किसी मानव ने नहीं की है। परन्तु ऐतिहासिक दस्तावेजों, मध्यकालीन शासकों द्वारा किये गए संरक्षण, जीर्णोद्वार व लोक वृत्तांतो से संकेत मिलता है कि इस मंदिर का निर्माण संभवतः 12वीं से 14वीं शताब्दियों के मध्य सरंक्षित पूजा स्थल के विकसित रूप में हुआ है। इस मंदिर का निर्माण मुख्यतः स्थानीय पीले – भूरे पत्थरों से किया गया है जो थार मरुस्थल में सहजता से सुलभ हैं। पत्थरों को परम्परागत छिन्नी–हथौड़े से तराशा गया है।मंदिर का मुख्य केंद्र बिंदु गर्भगृह है जहाँ स्वयंभू शिवलिंग विराजमान है। इसकी बनावट गोलाकार और प्राकृतिक पत्थर के स्वरुप में है जिसे किसी भी प्रकार से तराशा नहीं गया है जिससे इसकी दिव्यता और अधिक बढ़ जाती है। गर्भगृह का द्वार छोटा है जो प्रतीकात्मक रूप से यह दर्शाता है की भक्त को नम्र व झुककर प्रवेश करना चाहिए। मंडप को चार स्तंभों का सहारा देकर निर्मित किया गया है जिन पर बारीक़ नक्काशी का अभाव

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 14, Issue 7, July 2025

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1407137|

है परन्तु बनावट में स्थायित्व और संतुलन का भाव है। ये स्तम्भ मंदिर की सांस्कृतिक सादगी और ग्रामीण स्थापत्य शैली को प्रतिबिंबित करते हैं। मंदिर का प्रवेश द्वार साधारण किन्तु भव्य प्रतीत होता है। प्रवेश करते ही श्रद्धालु एक खुले प्रांगण में पहुँचते है जहाँ चारों ओर परिक्रमा पथ है। मंदिर के स्थापत्य को इस प्रकार से रचा गया है कि वह अपने प्राकृतिक परिवेश, बालू, झाड़ियाँ, रेगिस्तानी हवाएं पूर्ण तरीके से सामजस्य स्थापित करें।

इन ऐतिहासिक स्थलों के समक्ष प्रमुख समस्याएँ :

- **संरचनात्मक क्षरण –** बाड़मेर जिले के प्राचीन मंदिर सदियों पुराने होने के कारण समय के साथ अपनी संरचनात्मक मजबूती खो रहे हैं। पत्थरों पर जमी दरारें, छतों का टूटना और नक्काशीदार दीवारों का क्षरण इनके ऐतिहासिक स्वरूप को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है। कई स्थानों पर आधारशिला कमजोर हो चुकी है, जिससे सम्पूर्ण संरचना अस्थिर होती जा रही है। यह समस्या मंदिरों के दीर्घकालिक अस्तित्व के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।
- **पर्यावरणीय प्रभाव –** बाड़मेर की कठोर मरुस्थलीय जलवायु मंदिरों की धरोहरों पर गहरा असर डालती है। तेज़ धूप, अत्यधिक गर्मी, रेतीले तूफ़ान और तापमान का भारी उतार–चढ़ाव पत्थर की सतह और मूर्तियों पर क्षरण पैदा करते हैं। कई नक्काशीदार मूर्तियाँ अपनी मौलिकता खो रही हैं। प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण संरक्षण कार्य भी अधिक कठिन हो जाता है।
- **संरक्षण और देखरेख की कमी –** कई मंदिर उपेक्षा का शिकार हैं। नियमित सफाई, मरम्मत और संरचनात्मक सुधार न होने से ये धरोहर धीरे–धीरे क्षतिग्रस्त हो रही हैं। पुरातत्व विभाग या स्थानीय प्रशासन द्वारा अपेक्षित संरक्षण प्रयास न होने से ये मंदिर अपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व से वंचित हो रहे हैं। यदि समय रहते देखरेख न की गई तो आने वाली पीढ़ियों तक इनका मौलिक स्वरूप सुरक्षित नहीं रह पाएगा।
- **अतिक्रमण और मानवीय हस्तक्षेप –** मंदिर परिसरों के आसपास अनियंत्रित निर्माण, व्यापारिक गतिविधियाँ और अतिक्रमण इनके वातावरण को प्रभावित कर रहे हैं। इसके अलावा, पर्यटन की बढ़ती भीड़ में लापरवाही और असावधानी भी मंदिरों के लिए हानिकारक सिद्ध हो रही है। कई बार श्रद्धालुओं और पर्यटकों द्वारा दीवारों पर लिखावट करना, कचरा फैलाना या संरचनाओं को क्षति पहुँचाना आम समस्याएँ हैं।
- **आर्थिक संसाधनों का अभाव –** संरक्षण और विकास के लिए पर्याप्त आर्थिक संसाधन उपलब्ध न होना एक गंभीर समस्या है। स्थानीय समुदाय और धार्मिक ट्रस्टों के पास मंदिरों के रखरखाव और संरक्षण के लिए आवश्यक धन नहीं है। सरकारी सहायता सीमित होने के कारण मंदिरों की मरम्मत और पुनरुद्धार

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.699

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 14, Issue 7, July 2025

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1407137|

कार्य अधूरे रह जाते हैं। परिणामस्वरूप, कई महत्वपूर्ण मंदिर अपनी मौलिकता और भव्यता खोते जा रहे हैं।

संरक्षण हेतु किए जा रहे सरकारी प्रयास :

- **पुरातत्व विभाग द्वारा संरचनात्मक संरक्षण** – भारत सरकार के पुरातत्व विभाग (ASI) तथा राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग ने बाड़मेर जिले के कई प्राचीन मंदिरों को संरक्षित स्मारक घोषित किया है। इनके अंतर्गत मंदिरों की संरचनात्मक मरम्मत, आधारशिला की मजबूती और क्षतिग्रस्त पत्थरों के पुनर्स्थापन का कार्य किया जा रहा है। इससे मंदिरों के अस्तित्व को सुरक्षित रखने में मदद मिल रही है।
- **मरुस्थलीय धरोहर संरक्षण योजनाएँ** – राजस्थान सरकार ने थार क्षेत्र की धरोहरों को बचाने के लिए विशेष योजनाएँ लागू की हैं। इन योजनाओं के तहत बाड़मेर सहित मरुस्थलीय जिलों में स्थित मंदिरों के संरक्षण और पुनरुद्धार कार्यों को प्राथमिकता दी जा रही है। स्थानीय कारीगरों और पारंपरिक तकनीकों का उपयोग कर मूल स्वरूप को सुरक्षित रखने का प्रयास किया जाता है।
- **पर्यटन विभाग की पहल** – राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा मंदिरों और धार्मिक स्थलों को पर्यटन स्थलों के रूप में विकसित करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। मंदिर परिसरों में बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जा रही हैं और मंदिरों को सांस्कृतिक धरोहर मार्ग (Heritage Circuit) में शामिल किया गया है। इससे न केवल मंदिरों का महत्व बढ़ता है, बल्कि संरक्षण के लिए आर्थिक सहयोग भी सुनिश्चित होता है।
- **सांस्कृतिक एवं धार्मिक धरोहर संरक्षण निधि** – राज्य सरकार ने विभिन्न निधियों और योजनाओं के माध्यम से प्राचीन मंदिरों के संरक्षण हेतु वित्तीय सहयोग उपलब्ध कराया है। इस निधि का उपयोग न केवल मंदिरों की मरम्मत और पुनर्निर्माण के लिए किया जाता है, बल्कि मंदिर परिसरों में स्वच्छता, प्रकाश व्यवस्था और सुरक्षा प्रबंधों के लिए भी किया जाता है।
- **स्थानीय निकायों और समुदायों के सहयोग से संरक्षण** – सरकार द्वारा पंचायत राज संस्थाओं और स्थानीय निकायों के माध्यम से मंदिर संरक्षण को बढ़ावा दिया जा रहा है। सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करते हुए मंदिरों की नियमित सफाई, रखरखाव और धार्मिक आयोजनों के माध्यम से इनके महत्व को जनसाधारण तक पहुँचाने का कार्य किया जा रहा है। इस प्रकार सरकारी प्रयासों और जनसहभागिता के माध्यम से मंदिरों का संरक्षण अधिक प्रभावी बन रहा है।

संरक्षण हेतु सुझाव :

- **वैज्ञानिक संरक्षण तकनीकों का प्रयोग** – प्राचीन मंदिरों की संरचना को सुरक्षित रखने के लिए आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों और तकनीकों का उपयोग करना आवश्यक है। रासायनिक उपचार, पत्थरों की मजबूती बढ़ाने वाली तकनीक और नमी नियंत्रित करने वाले उपाय मंदिरों की दीर्घायु सुनिश्चित कर सकते हैं।
- **नियमित रखरखाव और निगरानी** – मंदिरों की संरचना और परिसर की नियमित सफाई, मरम्मत और देखरेख की जानी चाहिए। समय–समय पर विशेषज्ञ टीम द्वारा निरीक्षण कर मंदिर की स्थिति का मूल्यांकन करना चाहिए ताकि क्षति को प्रारंभिक स्तर पर ही नियंत्रित किया जा सके।
- **जनसहभागिता और स्थानीय समुदाय की भूमिका** – मंदिर संरक्षण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि स्थानीय लोगों की भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। स्थानीय समुदाय को जागरूक कर उनकी सहभागिता से मंदिरों की सुरक्षा और स्वच्छता को सुनिश्चित किया जा सकता है। सामुदायिक सहयोग से मंदिरों का सांस्कृतिक महत्व भी पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित रहेगा।
- **पर्यटन प्रबंधन और आय के साधन** – मंदिरों को पर्यटन से जोड़कर अतिरिक्त आर्थिक साधन उत्पन्न किए जा सकते हैं। पर्यटकों से प्राप्त शुल्क या दान का उपयोग मंदिरों के संरक्षण और विकास कार्यों में किया जा सकता है। साथ ही, पर्यटन गतिविधियों को नियंत्रित और सुव्यवस्थित करना भी आवश्यक है ताकि मंदिरों की पवित्रता और मौलिकता सुरक्षित रहे।
- **सरकारी नीतियों और योजनाओं का सुदृढ़ कार्यान्वयन** – सरकार द्वारा मंदिर संरक्षण के लिए बनाई गई योजनाओं और नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन होना चाहिए। बजट का समय पर उपयोग, प्रशासनिक निगरानी और पारदर्शिता से मंदिरों का संरक्षण अधिक प्रभावी हो सकता है। साथ ही, मंदिरों को 'सांस्कृतिक धरोहर' के रूप में दर्ज कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी संरक्षण निधि उपलब्ध करवाई जा सकती है।

निष्कर्ष :

बाड़मेर, राजस्थान का एक प्रमुख ऐतिहासिक जिला है, जो अपने प्राचीन मंदिरों, स्थापत्य शैली और सांस्कृतिक धरोहरों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के मंदिर न केवल आस्था के केंद्र हैं बल्कि ये इतिहास, स्थापत्य कला व मरुस्थलीय संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति भी है। यहाँ के मंदिरों की स्थापना प्राचीन राजवंशों परमार, सोलंकी और चौहान शासकों के काल में हुई थी। यहाँ के मंदिर 10वीं से 15वीं शताब्दियों के मध्य निर्मित हुए हैं।यहाँ के शासकों की धार्मिक निष्ठा, राजनीतिक सरंक्षण और सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शातें हैं। यहाँ के मंदिरों में नागर शैली की प्रमुखता है, जिसमें व्यापक शिल्पकला, कलात्मक तोरण, जटिल स्तम्भ कला शिल्प और सजीव मूर्तिकला

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 14, Issue 7, July 2025

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2025.1407137|

देखने को मिलती है। ये सभी मंदिर लोक संस्कृति, लोक कथाओं और धार्मिक उत्सवों के केंद्र है। इस प्रकार यहाँ के मंदिर स्थानीय स्थापत्य विरासत, ऐतिहासिक गाथाओं और सांस्कृतिक विविधता के प्रतीक हैं। इन मंदिरों का सरंक्षण न केवल धार्मिक भावनाओं से जुड़ा है, बल्कि यह राजस्थान की गौरवशाली सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने का एक सशक्त माध्यम है।

Refrences:

1. Barrie, T. (2020). *Architecture of the World's Major Religions: An Essay on Themes, Differences. Differences, and Similarities.*
2. Jordan, K. (2022). *Between the Sacred and the Secular: Faith, Space and Place in the Twenty-First Century.*
3. Haldar, P., Mukherjee, S., Kar, N. R., Puniya, M. K., & Choudhary, R. (2023). *Kiradu Temple Structural Condition and Preservation Analysis.*
4. "Analysis of Traditional and Existing Construction Practices for Sustainable Rural Houses in the Southern-Western Part of Rajasthan." (2018). *IJERT Conference Proceedings*, 6(11).
5. Bharucha, R. (2003). *Rajasthan: An Oral History—Conversations with Komal Kothari*. Penguin Books India.
6. Tiwari, S. (2024). *Adaption of Neo-Vernacular Architecture in Contemporary Temples in India: Insights from Selected Case Studies. International Society for the Study of Vernacular Settlements (ISVS) e-journal*, 11(8).
7. Mukherjee, S., Haldar, P., Puniya, M. K., Biswas, M., Kar, N. R., & Choudhary, R. (2023). *Architecture and Structures of Kiradu Temple (Barmer Region, Rajasthan, India). ResearchGate*.
8. Chaudhary, H. (2025). A Study on Dhok Ka Oran in Barmer District, Rajasthan [PDF]. SXC Journal of Public Research.
9. Haldar, P., Puniya, M. K., Biswas, M., Mukherjee, S., Kar, N. R., & Choudhary, R. (2023). Architecture and Structures of Kiradu Temple (Barmer Region, Rajasthan, India). [PDF]. Geosciences – IIT Bombay.
10. Tiwari, S., & Vij, M. (2024). Preserving the Legacy: The Enduring Influence of Indian Temples in 21st-Century Society. Propulsion Tech Journal, 45(04).
11. Jaiswal, P. (n.d.). Materials and Patterns in Religious Architecture: A Comparative Analysis of Traditional and Contemporary Hindu Temples in India. Academia.edu.
12. Rajasthan Tour Planner. (2025, March 3). Parshvanath Temple, Barmer: A Journey into Spirituality and Architecture.

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

Scan to save the contact details